Samyak
An Institute For Civil Services

RAS - 23 MAINS TEST SERIES

सिद्धि-II - 013

Time : 3 Hours **Maximum Marks : 200**

हिन्दी - भाग अ, भाग ब, भाग स
Hindi - Part (A, B, C)

Paper - IV

Name :		MARKS	
Enroll. No.:	Part	Attempted Questions	Marks Obtained
Date of Birth :	Part - A	30	71
Medium : Hindi	Part - B	8	47
E-mail :	Part - C	1	8
Exam Date :	Total	39	126
Invigilator's Signature :			
ECN: SID- RCN:			

अनुदेश (Instructions)

1. परीक्षा शुरू होने से पहले पुस्तिका को जाँच लें।
   Please check the booklet before commencement of the exam.
2. अंक योजना प्रत्येक खंड के प्रारम्भ में दी गई है।
   The marking scheme is given at the start of every section.
3. अभ्यर्थियों को उत्तर निर्धारित शब्द सीमा से अधिक नहीं लिखना चाहिए, इसका उल्लंघन करने पर अंक काटे जा सकते हैं।
   Candidates should not write more than the prescribed word limit in answers, violating this may result in deduction of marks.
4. अभ्यर्थियों को निर्देशित किया जाता है कि किसी भी प्रश्न का उत्तर प्रश्नोत्तर पुस्तिका में निर्धारित स्थान पर ही लिखें। बॉर्डर लाईन से बाहर प्रत्युत्तर नहीं लिखें। बॉर्डर लाईन के बाहर लिखे गये उत्तर को जाँचा नहीं जायेगा।
   Candidates are directed to write answers only in the prescribed space of booklet. They should not write answer outside the border line. Answer written outside the border line will not be checked.

	REVIEW PARAMETERS	SCALE			
		Good	Above Average	Average	Below Average
1.	DOES THE ANSWER ADDRESS THE DEMAND OF THE QUESTION?				
a.	Answer Relevancy				
b.	Answer Enrichment points like use of: · Key Terms/ Subject Vocabulary. Use of Commission/ report/ government publication/ judgements, etc. Association with the Current Affairs and use of examples to explain the concept and idea				
2.	HOW WELL IS THE ANSWER PRESENTED?				
a.	Structure - Intro, Body, Conclusion				
b.	Presentation – Using Subheadings/ points/ highlighting/ flowcharts/ diagrams/ maps				
c.	Language & Grammar				
d.	Word limit				

Detailed Comments / Feedback / Suggestions for Improvement
विस्तृत टिप्पणियाँ/फीडबैक/सुधार के लिए सुझाव

1. मुहावरे एवं लोकोक्ति पर ध्यान दें।

2. निरंतर अभ्यास करें।

शुभकामनाएँ

.....

भाग-अ

1. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए:- 4×½ = 2

(i) प्राप्ति + इच्छा = प्राप्तीच्छा

(ii) राजन् + ऋषि = राजर्षि

(iii) विधै + अक = विधायक

(iv) विद्वत् + वर्ग = विद्वद्वर्ग

2

2. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए:- 4×½ = 2

(i) संश्लेषण = सम् + श्लेषण

(ii) अकिञ्चन = अकिम् + चन

(iii) विराडायोजन = विराट् + आयोजन

(iv) धूमाच्छादित = धूम + आच्छादित

2

3. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए:- 4×½ = 2

(i) मूल + छिन्न = मूलच्छिन्न

(ii) सत् + उद्योग = सदुद्योग

(iii) परि + अवेक्षक = पर्यवेक्षक

(iv) ज्योतिः + आदित्य = ज्योतिरादित्य

2

4. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए:- 4×½ = 2

(i) अहर्निश = अहन् + निशा

(ii) स्वेच्छाचार = स्वेच्छा + आचार

(iii) सौभाग्याकांक्षिणी = सौभाग्य + आकांक्षिणी

(iv) वपुष्मान = वपुः + मान

2

5. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए:- $4 \times ½ = 2$

(i) विद्युद्ध्वज = विद्युत + ध्वज

(ii) प्रौद्योगिकी = प्र + औद्योगिकी

(iii) हुतासन = हुत + आसन अशन

(iv) प्रातस्स्मरण = प्रातः + स्मरण

1½

6. निम्नांकित उपसर्गों के संयोग से दो-दो शब्द बनाइये:- $4 \times ½ = 2$

(i) पुनर् = पुनरवलोकन, पुनरपि

(ii) अधः = अधः पतन, अधोगामी

(iii) वि = विकार, विजय

(iv) प्रति = प्रतिघात, प्रतिध्वनि

2

7. निम्नांकित शब्दों में से उपसर्ग पृथक् कीजिए- $4 \times ½ = 2$

(i) आनुषंगिक = अनु

(ii) नैराश्य = नि, निर्

(iii) वैधव्य = वि

(iv) अभ्युत्थान = अभि + उद् + स्थान

1½

8. निम्नांकित उपसर्गों के संयोग से दो-दो शब्द बनाइये:- $4 \times ½ = 2$

(i) दु = दुकाल, दुकान

(ii) उ = उन्नत, उच्चतम

(iii) स्व = स्वजन, स्वार्थ

(iv) अमा = अमावस्या, अमात्य

2

4×½ = 2

9. निम्नांकित शब्दों में से उपसर्ग पृथक् कीजिए-

(i) उन्नासी = उन्   उन

(ii) प्राक्कथन = प्राक्

(iii) लाचार = ला

(iv) सहित = स

1½

4×½ = 2

10. निम्नलिखित प्रत्ययों के संयोग से दो-दो शब्द बनाइयेः-

(i) इत = लिखित, पठित

(ii) आड़ी = अनाड़ी, खिलाड़ी

(iii) इष्णु = सहिष्णु, चलिष्णु

(iv) हरा = सुनहरा, दुबारा

2

4×½ = 2

11. निम्नांकित शब्दों में से प्रत्यय पृथक् कीजिए-

(i) हरीतिमा = इमा

(ii) औद्योगिकी = उद्योग + इक + ई   उद्योग + इक + ई

(iii) मनसिज = इज   ज

(iv) कब्रिस्तान = इस्तान

1

4×½ = 2

12. निम्नलिखित प्रत्ययों के संयोग से दो-दो शब्द बनाइयेः-

(i) इश = समझाइश, आजमाइश

(ii) ईन = खड़ीन, महीन

(iii) कर = चलकर, खाकर

(iv) ड़ा = दुखड़ा, पलड़ा

2

13. निम्नांकित शब्दों में से प्रत्यय पृथक् कीजिए- 4×½ = 2

(i) तेलंगाना = आना

(ii) आरण्यक = अक

(iii) लड़का = आ

(iv) ध्यातव्य = तव्य

2

14. निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए- 4×½ = 2

(i) तिरोभाव = आविर्भाव

(ii) अंबर = अवनि

(iii) अर्वाचीन = प्राचीन

(iv) सदय = निर्दय / क्रूर

2

15. निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए- 4×½ = 2

(i) आह्लाद = विषाद

(ii) अलम् = ईषत्

(iii) पराभव = विभव

(iv) मसृण = रुक्ष

2

16. निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए- 4×½ = 2

(i) सुघड़ = बेघड़ . फूहड़

(ii) विश्लिष्ट = संश्लिष्ट

(iii) क्षणिक = शाश्वत

(iv) आवाहन = विसर्जन

1½

4×½ = 2

17. निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

(i) शठ = साधु / सज्जन

(ii) हास = वृद्धि

(iii) ज्योत्स्ना = तिमिस्रा

(iv) स्थापन = उन्मूलन

2

4×1 = 4

18. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पयार्यवाची लिखिएः-

(i) अश्रु = आसूँ, नेत्रनीर

(ii) खान = आकर, खदान

(iii) क्षणभंगुर = क्षणिक, नश्वर

(iv) बेशुमार = बेहिसाब, बेअंदाज

4

4×1 = 4

19. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पयार्यवाची लिखिएः-

(i) क्षीर = दूध, दुग्ध

(ii) कूज = ध्वनी

(iii) महीधर = भूधर, पर्वत

(iv) अरुणोदय = सूर्योदय, प्रत्यूष, प्रातः काल

3

4×1 = 4

20. निम्नांकित शब्द-युग्मों का अर्थ भेद लिखिएः-

(i) खरा-खर्रा = विशुद्ध - गधा, लंबा चिट्ठा

(ii) स्वजन-श्वजन = परिजन - कुत्ता

(iii) शांति-श्रांति = राम - थकावट

(iv) हरिण-हरिण्य = मृग - एक राजा, सोना

2

21. निम्नलिखित शब्द-युग्मों का अर्थ भेद लिखिए:- 4×1 = 4

(i) सागर-साग़र = समुद्र - घड़ा शराब का प्याला

(ii) षष्टि-षष्ठी = साठ - छठी

(iii) पावस-पायस = वर्षा - खीर

(iv) प्रत्युपकार-प्रत्यपकार = अपकार - उपकार

3½

22. निम्नांकित वाक्यांशों के लिए सार्थक शब्द लिखिए:- 4×1 = 4

(i) किन्हीं घटनाओं का कालक्रम से किया गया यथातथ्य वर्णन = इतिवृत्त

(ii) शीघ्रता का अभाव = धीमे अत्वरा

(iii) घर के सबसे ऊपर के खण्ड की कोठरी = अट्टारी अटारी

(iv) मोक्ष की इच्छा रखने वाला = मुमूर्षु मुमुक्षु

1½

23. निम्नांकित वाक्यांशों के लिए सार्थक शब्द लिखिए:- 4×1 = 4

(i) सुख और दुःख में समान रहने वाला = मनस्वी

(ii) किसी कार्य में लीन/लगा हुआ = तल्लीन → व्यापृत चिंतन हेतु प्रयुक्त

(iii) जो खाना सदैव मुफ्त में दिया जाता है = सदावर्त सदावर्त

3

(iv) जिस शब्द के एक से अधिक अर्थ हो =

श्लिष्ट

24. निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए- 8×1 = 8

(i) किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखो।

किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखो।

6

(ii) मौर्यकालीन समय में लोग सुखी थे।

मौर्यकाल में लोग सुखी थे।

(iii) आपने बड़ी ऊँची कोटि की कहानी सुनाई।

आपने उच्च कोटि की कहानी सुनाई।

(iv) उसने हमारे नाक में दम कर दिया।

उसने ~~हमारे नाकों~~ में दम कर दिया।
हमारे मेरे नाक

(v) उसने मेरे को खाना खिलाया।

उसने मुझे खाना खिलाया।

(vi) वह सारी रातभर जागता रहा।

वह रातभर जागता रहा।

(vii) उज्जवल चरित्र के लिए मानसिक दृढ़ता आवश्यक है।

उज्ज्वल चरित्र के लिए मानसिक दृढ़ता आवश्यक है

(viii) तेरी बात सुनते-सुनते कान पक गये।

तुम्हारी बात सुनते - सुनते कान पक गये।

बातें बहुवचन के सुसंगत

25. निम्नांकित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए:- 4×1 = 4

(i) आल्हाद = आह्लाद

(ii) मिष्टान = मिष्ठान्न

(iii) केलाश = कैलास

(iv) प्रमाणिक = प्रामाणिक

4

26. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए:- 4×1 = 4

(i) प्रत्युत् = प्रत्युत

(ii) चन्द्रमोली = चन्द्रमौलि

(iii) किंववंदति = किंवदंती

(iv) प्रत्यवर्तन = प्रत्यावर्तन

3

27. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताते हुए वाक्यों में सार्थक प्रयोग कीजिए:- 4×2 = 8

(i) तीन तेरह करना - छिन्न भिन्न करना

• अर्थ - बहानों बनाना

प्रयोग :- माँ ने रमेश को बाजार से सामान लाने को कहा तो वह तीन तेरह करने लगा।

(ii) शैतान के कान कतरना - शैतान

अर्थ :- बहुत चतुर होना।

• राम इतना चतुर है कि वह शैतान के भी कान कतर सकता है।

(iii) जहाज का काग होना -

अर्थ :- थोड़े समय का मेहमान।

- राजस्थान में मानसूनी वर्षा जहाज के काग की तरह है।

(iv) बासी कढ़ी में उबाल आना

अर्थ :-

- एक वृद्ध पहलवान द्वारा लड़ाई हेतु ललकारने पर लोगों ने कहा कि देखो बासी कढ़ी में भी उबाल आ रहा है।

28. निम्नलिखित लोकोक्तियों का अर्थ बताते हुए वाक्यों में सार्थक प्रयोग कीजिए:- 4×2 = 8

(i) आई तो रोजी नहीं तो रोजा-

अर्थ :- काम मिला तो मजदूरी नहीं तो खाली पेट। 2

- दिहाड़ी मजदूरों की स्थिति आई तो रोजी नहीं तो रोजा वाली होती है।

(ii) खेती, खसम लेती है-

अर्थ :- बहुत कठिन कार्य।

- आर.ए.एस. की तैयारी खेती, खसम लेती जैसी है।

(iii) डायन को दामाद प्यारा-

बुरे लोगों को भी अपने प्रिय होते है

• अर्थ :→ अपने लोग बुरे लोग भी अच्छे लगते है।

प्रयोग :→ जब एक चोर की माँ ने कहा कि उसका बेटा तो शरीफ है तो लोगो ने कहा कि डायन को दामाद प्यारा होता ही है।

(iv) लेना एक न देना दो-

• अर्थ – किसी से कोई मतलब नही।

2

प्रयोग :→ रूस-यूक्रेन युद्ध पर गाँव के किसान ने कहा कि मुझे इससे लेना एक न देना दो → सांसारिक मोहमाया के प्रति एक सन्यासी की स्थिति लेना एक न देना दो वाली होती है।

29. निम्नांकित पारिभाषिक शब्दों के समानार्थक हिन्दी पारिभाषिक लिखिए- 5×1 = 5

(i) ABATE –

उपशमन करना

(ii) NOURISH –

पोषण करना

3

(iii) QUALIFIED SUPPORT –

अर्हक सहयोग सशर्त सहयोग

(iv) REPUGNANT –

(v) CERTIFY –

~~प्रमाणित~~ प्रमाणित करना

30. निम्नांकित पारिभाषिक शब्दों के समानार्थक हिन्दी पारिभाषिक लिखिए- 5×1 = 5

(i) OFFICIATING –

औपचारिक स्थापन्न

(ii) STIPEND –

भत्ता (3)

(iii) UNTENABLE –

अनुचित

(iv) CASUAL DRESS –

अनौपचारिक वस्त्र

(v) DEARNESS RELIEF –

मँहगाई राहत

"आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः"

भाग-ब

1. **निम्नलिखित अवतरण का उचित शीर्षक देते हुए एक-तिहाई शब्दों में संक्षिप्तीकरण कीजिए।** **अंक-10**

ध्यान कर्म का निषेध नहीं है, अपितु पूर्ण और शुद्ध कर्म का आधार है। ध्यान को ठीक से न समझने वाले लोग ही ध्यान को कर्म का निषेध समझ बैठते हैं। ध्यान और कर्म वैसे ही हैं, जैसे रस्सी का कुएँ के भीतर जाना और बाहर आना या हृदय का सिकुड़ना और फैलना। ध्यान स्वयं को जानने का साधन है और कर्म स्वयं को बाँटने का। स्वयं को जानना आत्म-ज्ञान है, और स्वयं को बाँटना प्रेम है। आत्म-ज्ञान से बुद्धि को ठीक निर्णय देने के लिए सत्य का आधार उपलब्ध होता है तो प्रेम से हृदय का विकास सम्भव हो पाता है, व्यक्तित्व की अखंडता और एकता के लिए बुद्धि और हृदय दोनों का समुचित विकास आवश्यक है। ध्यान का लक्ष्य विरोधात्मक वृत्तियों का समन्वय करके अंतर को प्रकाशित करना है और कर्म उस अन्तः ज्योति से बहने वाली करुणा और आनंद है।

शीर्षक — ध्यान और कर्म का संबंध एवं महत्व

3½

कर्मों में कुशलता ही ध्यान है। ध्यान से आत्मसाक्षात्कार तो कर्म से प्रेम उत्पन्न होता है। जिससे बुद्धि एवं हृदय का विकास होता है जो व्यक्तित्व मे एकाग्रता, करुणा एवं आनंद लाता है।

ध्यान एवं कर्म एक दुसरे के पूरक है विरोधी नही (33)

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

2. निम्नलिखित अवतरण का उचित शीर्षक देते हुए एक-तिहाई शब्दों में संक्षिप्तीकरण कीजिए। **अंक-10**

"आज देश स्वतंत्र है। हमें अपनी शक्ति की वृद्धि करनी है, जिससे हमारी नवीन स्वतंत्रता की रक्षा हो सके। आए दिन ऐसे संकट हमको चुनौती देते रहते हैं जिनसे निपटने के लिए एक शक्तिशाली सेना की आवश्यकता है। यदि विद्यालयों में ही देश-सेवा की यह भावना दृढ़ हो जाए तो भविष्य के लिए बहुत बड़ी तैयारी हो सकेगी। प्राचीनकाल में आश्रमों में वेद-शास्त्रों के साथ-साथ अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा भी दी जाती थी। द्रोणाचार्य ने कौरवों-पाण्डवों को सैनिक शिक्षा दी थी। सैनिक शिक्षा से शारीरिक शक्ति के साथ मानवीय गुणों का भी विकास होता है। सेवा, तत्परता, परिश्रमशीलता, निर्भयता आदि गुण इस शिक्षा से अपने आप आ जाते हैं। जीवन भी तो एक युद्धक्षेत्र ही है। इस क्षेत्र में लड़ने के लिए भी उपर्युक्त गुणों की आवश्यकता पड़ती है। हमारे देश की संस्कृति शांति प्रधान है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपनी शक्ति में वृद्धि न करें। आज सम्पूर्ण संसार सैनिक शिक्षा पर जो ध्यान दे रहा है उसे देखते हुए हमारे लिए भी इस ओर कदम बढ़ाना आवश्यक हो जाता है।"

3½

अनिवार्य सैन्य शिक्षा

स्वतंत्रता की रक्षा, देश भक्ति की भावना के साथ-साथ शारीरिक शक्ति एवं मानवीय गुणों, जैसे - परिश्रम, साहस, सेवा के विकास हेतु स्कूली स्तर से ही सैन्य शिक्षा दी जानी चाहिए।

(30)

अभ्यास करें।

अवतरण का माप लिखें

3. निम्नलिखित का भाव विस्तार कीजिए- अंक-10

शीर्षक- स्वर्ग की गुलामी से नरक का स्वराज श्रेयस्कर माना गया है।

7

इस पंक्ति का अर्थ यह है कि गुलामी सबसे बड़ा दुर्गुण जबकि आजादी सबसे बड़ा सद्गुण है। अतः हमें किसी ऐसे व्यक्ति की गुलामी, जो हमारे ऐशो-आराम की पूरी व्यवस्था करता है कि जगह हमें अपनी अभावों वाली आजादी को महत्त्व देना चाहिए।

"पराधीन सपनेहुँ सुख नाही" अर्थात् असली सुख तो आजादी में ही है। सोने के पिंजरे में कैद एक चिड़ियां भी खुले आसमान में उड़ना पसंद करती है क्योंकि आजादी के समान कोई दूसरा सुख है ही नहीं। मानव की असली पहचान उसका विवेक है और एक गुलाम कभी भी अपने विवेक का उपयोग नहीं कर पाता और वह केवल शारीरिक आवश्यकताओं के लिए पशु की भाँति जीता है।

अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी ने तो यहाँ तक कहा है कि हिंसा बुरी चीज है पर दासता उससे भी बुरी है और इसी वजह से भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान करो या मरो का नारा देते हुए उन्होंने हिंसक गतिविधियों का भी समर्थन किया क्योंकि दासता में व्यक्ति अपना शारीरिक, नैतिक, मानसिक, आध्यात्मिक विकास

कर ही नहीं पाता है और ना ही वह समाज आगे बढ़ पाता है जहाँ स्वतंत्रता का मूल्य न हो।

महर्षि दयानंद सरस्वती ने तो यहाँ तक कहा है कि एक दूसरे से दूसरा स्वदेशी राज्य भी अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से लाख गुना बेहतर है क्योंकि एक पराधीन मनुष्य केवल दूसरों के लिए साधन बनता है जबकि उसका असली उद्देश्य तो स्वयं को जानना, समाज की प्रगति में योगदान देना है जो केवल स्वतंत्र रहते हुये सृजनात्मक विचारों से ही हो सकता है।

अतः स्वतंत्रता पूर्वक बिताये 100 दिन दासता के 100 वर्षों से कहीं अधिक बेहतर है क्योंकि स्वराज तो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

स्वतन्त्रता - आत्मविकास का साधन

ॐ
नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

4. निम्नलिखित का भाव विस्तार कीजिए- अंक-10

शीर्षक- ज्ञान-विज्ञान से मनुष्य की अभिवृद्धि हो सकती है, विकास नहीं हो सकता।

इस पंक्ति का आशय है कि विज्ञान से व्यक्ति केवल भौतिक उन्नति हासिल कर सकता है मानसिक, आध्यात्मिक, नैतिक उन्नति नहीं और इस एकमुखी उन्नति के बिना व्यक्ति का विकास संभव नहीं है।

महात्मा गांधी ने कहा था कि मैं विज्ञान को विज्ञान तभी मानूँगा जब वह शरीर, मन, एवं आत्मा तीनों की आवश्यकताओं को एक साथ पूरा करे। वर्तमान में ज्ञान-विज्ञान का महत्व केवल सूचनाओं की प्राप्ति एवं भौतिक उन्नति तक ही पहुँच पाया है सूचना क्रांति के इस दौर में विज्ञान ने नैतिक मूल्यों का विकास तो दूर इसने ह्रास को ही बढ़ावा दिया है।

महात्मा गांधी अपने सर्वोदय के सिद्धांत के तहत प्रत्येक व्यक्ति के, चाहे वह अमीर हो या गरीब के भौतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास की बात कही है लेकिन वर्तमान तकनीक के युग में जहाँ विकसित एवं विकासशील, अमीर एवं गरीब के बीच आर्थिक असमानता बढ़ रही है तो वहीं बड़ो का सम्मान, स्त्री सम्मान, प्रकृति प्रेम जैसे मूल्य घट रहे हैं जो समावेशी एवं सतत् विकास में बाधक है।

अतः ज्ञान-विज्ञान को मूल्ययुक्त बनाने,

प्रकृति की रक्षा करने, साधन-साध्य की पवित्रता सुनिश्चित करने, परमाणु निरस्त्रीकरण की ओर कदम बढाने के रूप मे विकसित करना होगा क्योंकि विज्ञान दो धारी तलवार है जिसका उद्देश्य चलाने वाले पर निर्भर करता है अतः हमे विज्ञान को संपूर्ण समावेशी एवं सतत विकास का उपकरण बनाते हुए इस भौतिक उन्नति को विकास मे बदलना होगा तभी जाकर हम वर्तमान एवं आने वाली पीढियों के लिए एक रहने योग्य ग्रह का निर्माण कर 'कोई पीछे न छूटे' एवं एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य के सपने को साकार कर सकते है।

शब्द सीमा पूरी करें।
भाव विस्तार को प्रभावी बनाये

योद्धा: कर्तव्यो यन्तु विरक्ताः

5. निम्नांकित अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए। अंक-10

Although art and morality have been integral parts of society, there has always been a difference of opinion on some issues or topics. Art has often adopted and reflected offbeat behavior and attitudes. In many cases this practice of art has proved to be revolutionary. On the contrary, morality has been more tradition-based. Morality has set standards of good behavior based on social likes and dislikes in almost all areas. As a result, we have to face ethical norms at many levels, such as political ethics, business ethics, cultural ethics etc. But most emphasis is given on sexual morality. Not only this, everyone in the society is expected to know, understand and follow these codes of ethics and acceptance and taboos very well.

7½

चूंकि कला एवं नैतिकता समाज के समाकलित भाग है फिर भी कुछ विषयो और मुद्दो पर हमेशा मतो मे भिन्नता रही है। कला प्रायः अभिवृत्तियो एवं व्यवहार को लीक से हटकर अपनाने एवं प्रदर्शित करने वाली है और कई मामलो पर कला की यह प्रथा परिवर्तनकारी सिद्ध हुई है। दूसरी ओर नैतिकता ज्यादातर प्रथाओ पर आधारित रही है। नैतिकता समाज के सभी क्षेत्रो की पसंद एवं नापसन्द पर आधारित अच्छे व्यवहार के निर्धारित मानक रखती है। इसी कारण हमे बहुत से स्तरो पर नैतिक मानदंडो जैसे - राजनीतिक नैतिकता, व्यावसायिक नैतिकता, सांस्कृतिक नैतिकता इत्यादि का सामना करना पड़ता है। लेकिन सबसे ज्यादा जोर लैंगिक नैतिकता पर दिया जाता है। केवल यही नही बल्कि समाज मे प्रत्येक से यह आशा कि जाती है कि वह इन आचार संहिताओ, समाज मे स्वीकार्य एवं वर्जित विषयो को अच्छी तरह से जाने एवं समझे।

6. निम्नांकित अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए। अंक-10

Science and art are fundamentally two mediums of knowledge, but in the present world they have developed as two subjects of study and thus their relative importance has decreased. At the level of thinking, science and art complement each other and it seems that it is impossible to expand the influence of one without the other. But, at the practical level, some fundamental differences between the two subjects are also visible. Art is subjective whereas science is mainly dependent on interest. Science works on the basis of collection of facts, its integration and finally general conclusions. That is, it is necessary to have cause and effect. On the other hand, art is based on imagination, feelings and emotions. Therefore, it is definitely necessary to find the solution to the given question.

6

मूलभूत रूप से विज्ञान एवं कला ज्ञान के दो माध्यम है लेकिन वर्तमान विश्व में ये अध्ययन के दो विषय के रूप मे विकसित होने के कारण इनकी सापेक्षिक महत्व कम हुआ है। सोचने के स्तर पर विज्ञान एवं कला एक दूसरे को पूरकता प्रदान करते है और ऐसा प्रतीत होता है कि एक के बिना दूसरे के प्रभाव में वृद्धि असंभव है लेकिन व्यावहारिक स्तर पर दोनो के बीच कुछ मूलभूत अंतर भी दृश्यमान है। कला जहाँ आत्मनिष्ठ है तो वही विज्ञान मुख्यतः हितो पर आधारित है। विज्ञान तथ्यो के संग्रह इनके ऐकीकरण एवं अंतिम रूप से सामान्य निष्कर्षों पर कार्य करती है दूसरी ओर कला कल्पनाओ, भावनाओ एवं संवेदनाओ पर आधारित है इसिलिए दिये गये प्रश्न का हल खोजना निश्चित रूप से आवश्यक है।

7. नगरीय विकास एवं स्वायत शासन विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा स्वायत शासन विभाग में कार्यरत समस्त सेवानिवृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सेवायें तुरन्त प्रभाव से समाप्त किये जाने के बावत कार्यालयी आदेश जारी किये जाने के लिए कार्यालयी आदेश का प्रारूप लिखिए। अंक-10

C

राजस्थान सरकार

नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन विभाग, जयपुर

प.क्र. – आर(05)/नविस्वशाविज/विविध/2024/75. दिनांक:- 25 जनवरी, 2024

कार्यालय आदेश

आप सभी को सूचित किया जाता है कि ~~विभाग~~ इस विभाग मे कार्यरत समस्त सेवानिवृत्त अधिकारी/कर्मचारी जो कि गत वर्ष 15 ~~दिसम्बर~~ जनवरी, 2023 को विभाग मे आकस्मिक कार्य मे वृद्धि होने पर, अस्थायी रूप से नियुक्त किये गये थे कि सेवाएँ तुरंत प्रभाव से समाप्त की जाती है। अतः ये कर्मचारी/अधिकारी इस आदेश की अनुपालना करते हुए तुरंत प्रभाव से अपना पद छोड़ दे। पद से हटाया जाता है।

आज्ञा से

हस्ताक्षर

(क ख ग)

सचिव

नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन विभाग, जयपुर

प. क्र.- आर(05)/नविस्वशाविज/विविध/2024/76-80 दिनांक: 25 जनवरी, 2024

प्रतिलिपि सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

1. निजी सचिव, राज्यपाल महोदय, राजस्थान, जयपुर।
2. निजी सचिव, मुख्यमंत्री, राजस्थान, जयपुर।
3. सचिव, कार्मिक विभाग, राजस्थान, जयपुर।
4. कंप्यूटर एनालिस्ट, कंप्यूटर अनुभाग, नगरीय विकास एवं स्वायत्तशासन, विभाग
5. रक्षित पत्रावली

हस्ताक्षर

(क,ख,ग)

सचिव

नगरीय विकास एवं स्वायत्तशासन ~~विभाग~~ विभाग, जयपुर

8. माननीय कलेक्टर महोदय, जिला-बाड़मेर की ओर से कलेक्टर कार्यालय में इलेक्ट्रोनिक सामग्री के आपूर्ति बावत निविदा का प्रारूप तैयार कीजिए। अंक-10

(8)

राजस्थान सरकार

कार्यालय जिला कलेक्टर, बाड़मेर

प.क्र.- एफ(01)/का/जिक/बा/लेखा/2024/80 दिनांक: 15 नवंबर, 2024

निविदासूचना संख्या: 5/2024

राज्यपाल की ओर से इस कार्यालय मे इलेक्ट्रानिक सामग्री की आपूर्ति के लिए राज्य सरकार ~~में पंजीकृत~~ के तहत पंजीकृत संवेदकों से ऑनलाइन मुहरबंद निविदाएँ आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र एक निर्धारित शुल्क जमा कराकर इस कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है। निविदा प्रपत्र मे सभी प्रविष्टियाँ पूर्ण कर दिनांक 25 नवंबर, 2024 को सायं 3 बजे तक कार्यालय में जमा करवाना होगा। निविदा दिनांक 10 दिसंबर, 2024 को सायं 5 बजे ~~सभी~~ उपस्थित निविदादाताओं के समय खोली जाएगी। कार्य का विवरण इस प्रकार है:-

क्रमांक	कार्य का नाम	अनुमानित लागत	धरोहर राशि	निविदा शुल्क	कार्य की अवधि
1.	50 कंप्यूटर	50×20,000=10,00,000	20,000	1000	2 माह
2.	10 प्रिंटर	10×5,000= 50,000	1,000	1000	2 माह
3.	20 टेबलेट	20×1000= 20,000	400	1000	2 माह

आवश्यक शर्तें :-

1. निविदा में आंशिक परिवर्तन या पूर्ण निरस्ती का अधिकार कार्यालय के पास सुरक्षित होगा।
2. निविदा ऑनलाइन जमा कराना आवश्यक होगा केवल ऑफलाइन स्वीकार नहीं की जायेगी।
3. धरोहर की राशि केवल डिमांड ड्राफ्ट से स्वीकार्य होगी।
4. कार्य बीच में छोड़ने या विलंब से करने पर धरोहर की राशि जब्त की जा सकती है।
5. किसी भी न्यायिक विवाद का क्षेत्र जोधपुर उच्च न्यायालय होगा।
6. निविदा की विस्तृत शर्तें एवं विवरण www.eproc.rvy.in पर उपलब्ध है।

हस्ताक्षर
(अक्स)
कलेक्टर
जिला कलेक्टर, बाड़मेर

भाग-स

1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए- अंक-20

1. ई-शासन भ्रष्टाचार का शत्रु है।
2. वैश्वीकरण बनाम संरक्षणवाद

ई-शासन भ्रष्टाचार का शत्रु है।

8

वह शासन सर्वश्रेष्ठ है जो लोगो पर कम से कम शासन करे - महात्मा गाँधी।

चाणक्य ने कहा था कि एक बार के लिए मछली आकाश में उड़ सकती है लेकिन राज्य के अधिकारियो के बीच से भ्रष्टाचार खत्म नही हो सकता जो कि शासन-प्रशासन मे विद्यमान भ्रष्टाचार पर प्रकाश डालती है। भारत ही नही वरन् पूरे विश्व मे भ्रष्टाचार विद्यमान है जिसने समानांतर या काली अर्थव्यवस्था को जन्म देकर जनता के पैसे के दुरुपयोग को बढ़ावा देकर जनकल्याण की जगह केवल व्यक्तिगत हितो की पूर्ति करता है।

~~ग्लोबल परसेप्शन~~ भ्रष्टाचार परसेप्सन इंडेक्स द्वारा बताये गए कुछ कारण भ्रष्टाचार के कारको को उजागर करते हैं जो कि जटिल कानूनी प्रक्रियाएँ, पुराने निरर्थक कानून, विवेकाधीन शक्तियो लालफीताशाही, शासन मे नोटिंग प्रणाली के कारण है तो वही

भारत में ऑफिशियल सीक्रेट एक्ट, 1923, भ्रष्टाचार को सामाजिक मान्यता, भ्रष्टाचारियों का महिमामंडन, भ्रष्टाचार निरोधक कानून, 1988 का कमजोर प्रवर्तन, शासन में अपारदर्शिता, अजवाबदेहिता एवं जन-जागरूकता का अभाव प्रमुख कारण है तो वही राजनेता-सिविल सेवक गठजोड़, क्रोनी पूंजीवाद इसे और भी कठिन बना देता है।

भ्रष्टाचार से निपटने हेतु लोकपाल, सूचना का अधिकार अधिनियम-2005, सिटीजन चार्टर, लोकसेवा गारंटी अधिनियम जैसे उपाय किये गये तो वही शासन में सूचना तकनीक एवं इंटरनेट के प्रयोग ने भी भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। शासन-प्रशासन में इंटरनेट, सूचना तकनीक जैसे - कैमरा, ई-मेल, दस्तावेज का डिजिटाइजेशन ही ई-शासन है। ई-शासन ने जहां प्रशासन के दस्तावेज, निर्णय-प्रक्रियाओं तक जनता की पहुँच बढ़ाई है तो वही सरकारी कार्यों में लालफीताशाही में कमी, पदसोपान में लचीलापन लाकर कार्यों में शीघ्रता लाकर भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाया है।

वर्तमान में 'प्रगति प्लेटफार्म' पर केन्द्र एवं राज्य भ्रष्टाचार को रोकने की सर्वोत्तम प्रथाएँ साझा कर सहयोग रख

समन्वय को बढ़ा रहे है तो वही उमंग ऐप, उद्यमी मित्र पोर्टल, डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर, पहल जैसी योजनाओ के द्वारा लाभार्थियो को सीधे सहायता पहुँचाई जा रही है तो वही पी.डी.एस. प्रणाली मे पी.ओ.एस. मशीन, जियोटैगिंग का उपयोग कर खाद्यान्न के वितरण की पूरी प्रक्रिया पर निगरानी कर भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाया गया है।

वर्तमान मे सरकार नीति निर्माण, कानून पर ट्विटर, फेसबुक एवं अन्य सोशल मीडिया द्वारा जनता की राय जान कर जनभागीदारी को बढ़ा रही है, तो वही राजस्थान सरकार के जन सूचना पोर्टल ने तो सरकारी सूचना तक पहुँच को और सुगम बनाकर शासन मे पारदर्शिता, जवाबदेहिता, सुशासन को स्थापित किया है वर्तमान मे कोयला आवंटन, स्पेक्ट्रम आवंटन की प्रक्रियाएं ऑनलाइन होने से प्रतिस्पर्धात्मक माहौल मे पारदर्शिता बढ़ी है तो वही अन्य देशो से सूचना साझा कर भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाया जा रहा है। जैसे भारत-स्वीट्ज़रलैंड के मध्य वित्तीय सूचना साझाकरण समझौता।

अतः शासन मे वर्तमान नवीनतम तकनीक जैसे ए.आई., बिग डेटा, आई.ओ.टी., डिजिटल मुद्रा, क्वांटम कंप्यूटिंग को बढ़ावा देकर एवं साइबर अपराधो पर प्रभावी रोक लगाकर भ्रष्टाचार पर अंकुश लगा लोक कल्याणकारी राष्ट्र, सर्वोदय, रामराज्य की स्थापना की जा सकती है।